Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

महादेवी वर्मा का काव्य वितान : एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ० माया गोला

असि0 प्रो0 सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय

Article Info
Volume 6, Issue 6
Page Number : 154-160

Publication Issue :
November-December-2023

Article History
Accepted : 10 Dec 2023
Published : 30 Dec 2023

शोध सारांश :– दुनिया का कोई भी सहित्य हो दरअसल वह अपने समय और समाज की उपज होता है। इसमें उस देश की सामाजिक, सांस्कृतिक रीति नीति के साथ–साथ उस समय और समाज की भिन्न–भिन्न परंपरा का विशेष योग होता है। किसी साहित्यकार की अपनी समकालीन भिन्न–भिन्न स्थितियां यथा–राजनीतक, सामाजिक, सांकृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक आदि स्थितियां उसके साहित्य सृजन को प्रत्यक्ष परोक्ष रूप में प्रभावित करती रहती हैं। महादेवी वर्मा छायावाद के महत्वपूर्ण कवियों में से एक हैं। उनके काव्य संग्रह–नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा, सप्तपर्ण हैं। भिन्न–भिन्न आलोचकों ने उनके संपूर्ण काव्य पर लोकोत्तर और रहस्यवादी होने का आरोप लगाया है। यह शोध आलेख उनके काव्य के इहलौकिक और अपने समय और समाज की चिंताओं से ओत प्रोत होने की एक संभव खोज भर है।

बीज शब्दः– सहित्येतिहास, श्रृंखला, लोकोत्तर, रहस्यवाद, पलायनवाद, कपना, यथार्थवाद, प्रकृति, लाक्षणिकता, वक्रता, अभिव्यंजना, स्वाधीनता, आंदोलन, समीक्षा, शक्ति, प्रत्याख्यान, ऐतिहासिक, दृष्टि, व्यक्ति वैचित्र्य, समकालीनता, छायावाद, नवजागरण, अनुभूति व सहानुभूति, इहलौकिक व पारलौकिक, वेदना, कविता आदि।

26 मार्च का दिन हम सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन होता है क्योंकि आज ही के दिन हिंदी के विशाल मंदिर की वीणा पाणि अर्थात् महीयसी महादेवी वर्मा का जन्म हुआ था। एक प्रकार से हमारे लिए यह एक त्योहार का दिन है। बस यह ध्यान रहे कि हम महीयसी को मिथक ना बना दें। उन्हें धीरे–धीरे ईश्वर न बना दें। उनकी पूजा न करने लगें। यदि हम थोड़ा सचेत एवं मेहनत करके इतिहास में झांक लें तो ऐसे तमाम उदाहरण हमें देखने को मिल सकते हैं जहां दुनिया के तमाम ताकतवर बुद्धिजीवियों को हमने ईश्वर बनाकर ; अतिश्रद्धा, अंधभक्ति रूप से उनकी पूजा करने लगें है। अब हम उनसे प्रश्न नहीं करते हैं, उनसे संवाद नहीं करते हैं। उनको अजीबोगरीब दुनिया की सत्ता बनाकर उनके आगे नतमस्तक होना लाजमी समझते हैं। उदाहरण स्वरूप में बुद्ध, कबीर तुलसी, विवेकानंद गांधी, आम्बेडकर, रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

द्विवेदी और अब नामवर सिंह जी भी। यदि इन्हें मार्गदर्शक, दोस्त यह कुछ और (जो इहलौकिक हो) समझकर ; इनके बगल में बैठकर (इनके लिखे के साथ) इनसे संवाद करते तो हमें हमारे समय और समाज के जरूरी प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं। पर हमें तो पूज पूज कर चीजों की, वस्तुओं की तथा व्यक्तियों आदि इत्यादि की हत्या करने का शौक सा लग गया है। बहरहाल आज महादेवी वर्मा को पूरी तरह से समझने के लिए उनकी कविताओं के साथ–साथ उनके गद्य को विशेषतः 'श्रृंखला की कड़िया'' को रखकर पढ़ना होगा। आज बहुत सारे बुद्धिजीवी ऐसा कर भी रहे हैं। उदाहरण के रूप में मैनेजर पांडेय जी का नाम लिया जा सकता है।

महादेवी वर्मा जी का नाम लेते ही हमारे जेहन में छायावाद की एक तस्वीर उभर कर सामने आती है और उस तस्वीर में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी भी। आलोचना के शिखर पुरुष आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने महीयसी को अपने साहित्येतिहास में केवल आधा ही पेज दे सकें हैं। सभी छायावाद कवियों को देखें तो सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी को तीन पेज, जयशंकर प्रसाद जी को दस पेज और सुमित्रानंदन पंत जी को तेरह–चौदह पेज।''[1] पंत जी को लगभग वही पेज दिए हैं जो गोस्वामी तुलसीदास जी को दिए हैं और महादेवी वर्मा उनके लिए– ''वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियां सामने रखी हैं जो लोकोत्तर है। कहां तक वे वास्तविक अनुभूतियां हैं और कहां तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना है, यह नहीं कहा जा सकता।''[2]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के अनुसार महादेवी वर्मा शुद्ध रहस्यवादी हैं और लोक से इतर हैं। अर्थात् वे अपनी ही दुनिया अपने ही अज्ञात प्रियतम में डूबी है। शायद आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी उनके प्रियतम को ढूंढने की कोशिश नहीं की। न ही उनके सामाजिक जीवन को उनकी कविताओं में खोजने की जरूरत समझें। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सामने, महादेवी वर्मा की रचनाएं यथा– नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और 'यामा' थीं। पर आचार्य शुक्ल जी ने उसकी दो ढाई कविता वह भी दो दो पंक्तियों से उद्धृत करके अपने आलोचना दायित्व से मुक्त हो गए। आलोचना के दूसरे शिखर पुरुष आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी; आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी को आधार बनाते हुए महादेवी वर्मा को केवल और केवल आधा पेज दे सकें। आचार्य द्विवेदी जी ने महादेवी वर्मा की तुलना घूमा–फिरा कर जयशंकर प्रसाद से करके, प्रसाद जी को श्रेष्ठ सिद्ध करते हुए महीयसी को लिखते हैं –''महादेवी जी की कविताओं में 'चिरंतन' और 'असीम' प्रिय अत्यंत कोमल, मोहन और उत्सुक प्रणई के रूप में चित्रित हुआ है...।''[3] और इस तरह कोमल, मोहन लिखकर द्विवेदी जी भी अपने आलोचना कर्म–दायित्व से मुक्त हो गए।

व्यावहारिक समीक्षा जगत में तुलना एक जरूरी तत्व है। कोलरिज से लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल तक यह बराबर चलता रहा है पर आचार्य द्विवेदी जी को प्रसाद के साथ–साथ सुभद्रा कुमारी चौहान को भी महादेवी वर्मा के अलग–बगल रखना चाहिए था। तब यह अच्छी तरह भाषित होता हे कि ये दोनों सहेली–कवयित्रियां में कितना ओज, तेज व राष्ट्रीय चेतना परिव्याप्त है। छोटे–बड़े लगभग सभी आलोचक महादेवी वर्मा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल के ही चश्मे से देखते रहें। और वह चश्मा रहस्यवादी रहा, लोकोत्तर का रहा, वेदना कर रहा है जो कवयित्री जीवन भर अधिकार की लड़ाई लड़ती रही शिक्षा की मुहिम चलाती रही ; उसे लोगों ने लोक से इतर सिद्ध कर दिया। यह नहीं भूलना चाहिए कि महीयसी का समय स्वाधीनता आंदोलन

का समय था।उस समय की सड़के आंदोलन से भरी थीं। चारों तरफ आजादी की चाह थी, उस खुले और स्वाधीन बसंत की चाह थी।

"जो तुम आ जाते एक बार
हंस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आंखें देती सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार... ।"[4]

आखिर महादेवी वर्मा किस बसंत की बात कर रही हैं? कहीं यह स्वाधीनता का बसंत तो इसका एक पाठ स्वाधीनता आंदोलन–आजादी की चाह की कामना का केन्द्र में रखकर पढ़ना चाहिए और यहीं सुभद्रा कुमारी चौहान के वीरों का कैसा हो बसंत' और 'खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी' को भी साथ–साथ रखकर पढ़ने की जरूरत है। तब स्पष्ट होगा कि महीयसी महादेवी वर्मा किस बसंत की बात करती हैं। महीयसी का संपूर्ण जीवन, कथनी करनी से कभी अलग हुआ ही नहीं। समाज कल्याण का उनका दायरा बहुत व्यापक था; जिसको शायद कलमबद्ध किया नहीं गया या बुद्धिजीवियों ने भी करना नहीं चाहा।

छायावादी काव्य एक बड़े रूप में स्वाधीनता से जुड़ा हुआ है। कुछ कवि (माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि) खुलकर लिख रहे है तो कुछ शांत भाव से। प्रत्यक्ष– परोक्ष स्वाधीन राष्ट्रीय चेतना परिव्याप्त थी। एक तरफ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला लिखते हैं –

"है अमा–निशा; उगलता गगन घन अंधकार;
खो रहा दिशा का ज्ञान : स्तब्ध है पवन–चार;
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधु विशाल;
भधूर ज्यों ध्यान–मग्न; केवल जलती मशाल।''[5]

दूसरी तरफ जयशंकर प्रसाद लिखते हैं –

"शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त।
विकल बिखरे हैं, हो निरूपाय;
समन्वय उसका करे समस्त

विजयिनी मानवता हो जाए।''[6]

और महादेवी वर्मा लिखती हैं–

"बांध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?

पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?

जाग तुझको दूर जाना।''[7]

"प्रिय तेरे नभ–मंदिर की

मणि दीपक बुझ–बुझ जाते

जिनका कण कण विद्युत है

मैं ऐसे प्राण जलाऊं

तुम सो जाओ मैं गाऊं''[8]

यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो"[9]

"बीन भी मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ

आग हूँ जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के

शून्य हूँ जिसके बिछे हैं पावड़े जल के

पुलक हूँ जो पला है कठिन प्रस्तर में

नील घन भी हूँ सुनहली दामिनी भी हूँ"[10]

दरअसल तुलनात्मकता व्यावहारिक समीक्षा जगत की एक बेहद महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसके सहारा समीक्षक सर्जक व उसकी सर्जना की जमीन को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है और साहित्येतिहास को समृद्ध करते हुए उसे अग्रगामी प्रगतिशील बनाता है। यहां पर ध्यान से देखे तो निराला के पास 'अन्याय जिधर हैं उधर शक्ति' के बाद भी स्वाधीनता की ऊर्जा ब्रिटिश हुक्मरानों के खिलाफ' भारत वर्ष में बहुत कुछ बची है क्योंकि गगन अंधकार के बावजूद भी'... ध्यान मग्न केवल जलती मशाल है। वहीं जयशंकर प्रसाद के पास 'शक्ति के विद्युत्कण' है तो महादेवी वर्मा के पास भी 'मणि–दीपक' व 'कण कण विद्युत' है। इस दीप–दीपक को महीयसी चुपचाप जलने के लिए अपने काव्य–साहित्य से प्रतिबद्ध हैं। ये सारे कवि एक दूसरे से जुड़ते हुए भी एक दूसरे से भिन्न हैं; पर इनकी कविता गहरे भाव रूप से स्वाधीनता के लिए व्याकुल है। साहित्य की अपनी शर्ते होती हैं। एक्टिविस्ट विशेषतः राजनीति की भांति सड़कों पर झण्डे लिए नहीं दौड़ा करते हैं। वह शांत भाव से अपने साहित्य कर्म, साहित्यिक संस्कार से बद्ध होकर जन सामान्य के लिए परिवर्तन चाहता है। इसका पूर्ण दायित्व महीयसी अपने काव्य साहित्य में निभाती है।

महादेवी वर्मा कभी भी लोकोत्तर नहीं रही हैं। वह इसी लोक की पीड़ा–श्रृंखला की बेड़ियों से आहत थीं। इसी से मुक्ति की कामना करती हैं। इस मुक्ति की कामना के लिए वे बीन–रागिनी बनती है तो कभी आग और दामिनी भी। इस मुक्त कामना के रूप को और खुला देने के लिए महीयसी के गद्य–साहित्य को उनके काव्य–सहित्य के साथ रखकर पढ़ना होगा। 'श्रृंखला की कड़िया' अपने गहरे तर्क संवाद से, पूरी बौद्धिकता से बद्ध है। श्रृंखला की कड़िया 11 अध्याय में बद्ध होते हुए अपने शुद्ध स्वस्थ विचारों से लिपिबद्ध है जो कवयित्री अपने समय और समाज में हो रही छोटी–छोटी घटनाओं पर अपनी पैनी दृष्टि रखी हुई हो; जिसको प्रचीन रोम, यूनान, टर्की, सोवियत रूस आदि देशों के इतिहास व वर्तमान की गहरी जानकारी हो, वह कवयित्री लोक से इतर कैसे हो सकती है, कैसे उसके काव्य के विषय रूप सीमिति हो सकेत हैं, साहित्योतिहास इतिहासकार सुमन राजे की इस टिप्पणी ध्यातव्य है –

"यूं तो छायावाद को प्रारंभ से ही नवोदित हिंदी आलोचना ने लानत– मलानत पेश की है, परंतु स्त्री होने के नाते महादेवी पर कुछ अधिक प्रहार हुए हैं। शायद, सबसे अधिक करकने वाली बात है, उनका स्वतंत्र व्यक्तित्व मातृत्व के न होने की बात करना 'कुठांव' मारना ही है। संपादक की सम्पति में ''उनका दुख वैसा ही है जैसा किसी अमीर आदमी का मनोरंजन के लिए पैदल चलना। श्रीमती का दुख उनका सैरगाह ही है।''[11]

कुछ आलोचक को काव्य गीतात्मकता बहुत चुभती है। वे यह भूल जाते हैं कि काव्य में दर्शन और गीतात्मकता; काव्य की उम्र को और बढ़ा देते हैं। जनमानस के मन मस्तिष्क में लंबे समय तक बने रहते हैं। एक कार से उसमें ताजगी बनी रहती है। उदाहरण स्वरूप कबीरदास, गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास की कविता को देखा जा सकता है। जिसमे दर्शन और गीतात्मकता पूरी भरी पड़ी और उनकी कविताएं आज भी जनमानस के लिए ताजगी से पूर्ण हैं। महादेवी वर्मा कविताएं भी इसी परंपरा में देखी जा सकती है। उनके की यह गीतात्मकता लंबे समय तक उनकी कविताओं को ताजगी देती रहेंगी।

महीयसी काव्य में विविध रूप अपने रंग और कहन के साथ विद्यमान है। प्रकृति, स्त्री, स्वाधीनता, रहस्य, दर्शन आदि इत्यादि सब कुछ विद्यमान है। बशर्ते शाब्दिक अर्थ से आगे कोई पाठक आलोचक जाए। छायावाद के एक बड़े कवि ; जिनको प्रकृति की भिन्न–भिन्न उपाधियां दे दी गई हैं। अर्थात् सुमित्रानंदन पंत जी लिखते हैं –

"छोड़ द्रुमों की मृदुछाया

तोड़ प्रकृति से भी माया

बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन ? "

और महादेवी वर्मा जैसे इसी कविता का प्रत्याख्यान रचती हैं। प्रकृति का मानवीयकरण करते हुए स्त्री रूप में अद्भुत ढंग से उकेरती हैं। पूरी प्रकृति ही स्त्री बन गई है –

"रूपसि तेरा घन–केश पाश!

श्यामल–श्यामल कोमल–कोमल,

लहराता सुरभित केश–पाश !

नभ गंगा की रजत धार में,

धो आई या इन्हें रात ?

कंपित हैं तेरे सजल अंग,

सिहरा सा तन है सद्यस्नात!

झुक सस्मित शीतल चुबन से

अंकित कर इसका मृदुल भाल;

दुलरा देना बहला देना,

यह तेरा शिशु जग है उदास!"[12]

महादेवी वर्मा का समय नवजागरण का समय था और नवजागरण का प्रभाव–परोक्ष रूप में महादेवी जी पर भी पड़ा था। स्त्री चेतना की जो लहर नवजागरण से उठी थी वह महादेवी जी के यहां भी दिखाई पड़ती है। महादेवी जी तो दो कदम और आगे बढ़कर नवजागरण कालीन स्त्री विषयक चिंतन पर भी प्रश्न चिन्ह लगा देती हैं। इस चिंतन के संदर्भ में प्रो0 सुधा सिंह लिखती हैं –

"महादेवी को आपत्ति इस बात पर है कि नवजागरण में जिस स्त्री, दलित, शोषित आदि के उत्थान का मयार खड़ा किया गया वह वास्तविक संवेदनाओं से युक्त नहीं था .... नवजागरण और उसके बाद के दौर में अगर स्त्री की सामाजिक अवस्था की गंभीर विवेचन होती है तो शायद महादेवी को श्रृंखला की कड़ियां लिखने की जरूरत नहीं पड़ती।''[13]

कहने का तात्पर्य यह कि जो कवयित्री अपने समय के ज्वलंत प्रश्नों से जूझ रही है। उसका संपूर्ण काव्य रहस्यवादी और लोकोत्तर कैसे हो सकता है ? महादेवी वर्मा का वस्तुतः संपूर्ण काव्य लोक हित के अधीन है। उसमें छायावाद की बहुत सी प्रवृत्तियों की भांति यथा– कल्पना, लाक्षणिकता, व्यक्ति वैचित्र्य, वक्रता, स्वाधीनता, संस्कृतनिष्ठ भाषा और आदि के साथ रहस्यवाद भी है। पर उनका संपूर्ण काव्य न तो रहस्यवादी है और न ही पलायनावदी और न ही लोकोत्तर।

संदर्भ सूची

1.हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, आगरा (उ०प्र०), पृ0 444–470

2.वही, पृ० 469

3.हिंदी साहित्य उद्भव और विकास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 249

4.कविता कोश से उधृत

5.निराला : राम की शक्ति–पूजा, कर्मेदु शिशिर, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ० 1

6.हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ० 110

7.महादेवी साहित्य – 1, 1969 निर्मला जैन (सं०) वाणी प्रकाशन, सांध्यगीत, पृ० 27

8.कविता कोश से उद्धृत

9.कविता कोश से उद्धृत

10. कविता कोश से उद्धृत

11.हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ० 253

12. कविता कोश से उद्धृत

13.स्त्री संदर्भ में महादेवी, सुधा सिंह, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ॰ 24–25